डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 33, 1 कुरिन्थियों 16, यरूशलेम संतों के लिए संग्रह के प्रश्न पर पॉल की प्रतिक्रिया और समापन टिप्पणियाँ

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह व्याख्यान 33, 1 कुरिन्थियों 16, यरूशलेम के संतों के लिए संग्रह के प्रश्न पर पॉल का उत्तर और समापन टिप्पणियाँ हैं।

खैर, 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर व्याख्यानों की हमारी श्रृंखला के अंतिम व्याख्यान में आपका स्वागत है।

आज हम अध्याय 16 पर चर्चा करेंगे। अगर आप उन दुर्लभ लोगों में से हैं जिन्होंने इन सभी व्याख्यानों को सुना है, तो बधाई। इन व्याख्यानों को सुनकर मुझे सम्मानित करने के लिए आपका धन्यवाद।

मुझे उम्मीद है कि वे आपके शोध को प्रेरित करेंगे। 1 कुरिन्थियों की पुस्तक के संदर्भ में और भी बहुत कुछ खोजा जा सकता है और अच्छे साहित्य को पढ़कर इसकी पुष्टि की जा सकती है। अच्छे साहित्य को पढ़ना आपके विकास और बाइबल के किसी भी भाग की अपनी समझ के बारे में आत्मविश्वास रखने की आपकी क्षमता का रहस्य है।

खैर, आज व्याख्यान 33 है, और यह नोटपैक संख्या 17 है, जो पृष्ठ 241 से शुरू होता है। पृष्ठ 241, नोटपैक 17, और हम पुस्तक के अंत, अध्याय 16 को देख रहे हैं। यह एक पत्र है, जैसा कि हमने पहले बात की है।

यह एक लंबा पत्र है, और यदि आपको याद होगा, तो पत्रों में एक आरंभ, एक मुख्य भाग और एक समापन होता है। और अब हम पत्र के अंत में आ रहे हैं, लेकिन अभी समापन नहीं हुआ है। समापन अध्याय 16 का अंतिम भाग है, क्योंकि पॉल अभी भी एक ऐसे मुद्दे को संबोधित करने जा रहा है जो या तो प्रश्नों या कुरिन्थियों की रुचि का हिस्सा है, या शायद पॉल की पदोन्नति है, लेकिन वह 16.1 में पेरी-डेथ, जो अब चिंताजनक वाक्यांश है, का उपयोग करता है जो इसे अध्याय 7.1 और उसके बाद के प्रवाह से जोड़ता है।

अब के बारे में NIV 2011 में जिस तरह से बताया गया है। अब, संग्रह के बारे में। यह उस भेंट से संबंधित है जो पॉल के लिए एक बड़ी, बड़ी परियोजना थी।

यह यरूशलेम के संतों से संबंधित था। शहर में संसाधनों की उपलब्धता के मामले में अर्थव्यवस्था और अकाल की समस्याएँ थीं, और पॉल ने इसे अपना मिशन बना लिया था कि वह यरूशलेम वापस ले जाने के लिए पैसे इकट्ठा करे ताकि इस काम में मदद मिल सके। और मुझे यकीन है कि इसका बहुत कुछ पॉल के अपने जुनून से जुड़ा है।

वह एक यहूदी था, वह यहूदियों का यहूदी था, जैसा कि वह अपनी गवाही में कहता है, और वह यरूशलेम शहर से प्यार करता था, और वह अपनी परंपराओं से प्यार करता था, और वह, मुझे लगता है, न केवल यहूदी लोगों को बल्कि यरूशलेम में यहूदी चर्च को भी यह दिखाना चाहता था कि इस महान गैर-यहूदी मिशन ने उन्हें नहीं भुलाया है। वे अभी भी उन्हें अपनी माँ के रूप में देखते थे, जिसने उन्हें पुराने नियम के संदर्भ में यीशु को देखने का अवसर प्रदान किया है। अब एक संग्रह जो पॉल यहूदी ईसाइयों और यरूशलेम में गरीबों के लिए इन गैर-यहूदी चर्चों से मांग रहा था, पृष्ठ 241 पर 1a में।

मैंने आपको यहाँ अन्य पाठ दिए हैं जो इस संग्रह का संदर्भ देते हैं, और आप उन अंशों को देखकर यह देख सकते हैं। संरचनात्मक संकेतक पर वापसी, अब चिंताजनक है, यह दर्शाता है कि पॉल अभी भी कुछ कुरिन्थियों की चिंताओं को संबोधित कर रहा है, या तो कोई सवाल जो वे पूछते हैं या शायद कुछ चिंताएँ जो उसे पता था कि उनके पास थीं। यह भेंट यरूशलेम में संतों के लिए पॉल के जुनून से संबंधित है।

वे कठिनाइयों से जूझ रहे थे, और विशेष रूप से एशियाई चर्चों का यह प्रयास, जिनका पॉल ने उल्लेख किया है, उनकी मदद करने से मातृ चर्च को बहुत सद्भावना मिलेगी। संग्रह के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ग्रीक शब्द धर्मनिरपेक्ष ग्रीक में पवित्र उद्देश्यों के लिए धन की याचना करने के लिए आम था। गारलैंड ने नोट किया कि यह एकमात्र ऐसा समय है जब पॉल ने यरूशलेम संग्रह परियोजना के संदर्भ में इस विशेष शब्द का उपयोग किया है।

गारलैंड का मानना है कि यह संकेत दे सकता है कि कोरिंथियन ने किसी कारण से उस शब्द का इस्तेमाल किया था और पॉल ने इसे इसलिए चुना क्योंकि वह यरूशलेम परियोजना के अन्य संदर्भों में इसका इस्तेमाल नहीं कर रहा था। आप गारलैंड के दिलचस्प चार्ट को देख सकते हैं जिसमें यरूशलेम परियोजना के बारे में पॉल की कल्पना को दर्शाया गया है। मैंने यहाँ नोट्स में इसे दोहराना नहीं चुना। यह एक टिप्पणी है जो आपके पास होनी चाहिए, और आप उस स्थान पर चार्ट देख सकते हैं।

यरूशलेम में गैर-यहूदी चर्च की यह सेवकाई संभवतः पॉल और, उम्मीद है, उस युग के अन्य ईसाइयों के लिए कई चीजों का संकेत देती थी। सबसे पहले, यह गैर-यहूदी चर्च की यहूदी मूल के प्रति आध्यात्मिक ऋण की स्वीकृति थी, और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है। चर्च का जन्म किसी ऐतिहासिक संबंध से नहीं हुआ था।

चर्च ने मसीहा के इस यहूदी मिशन को अपने इतिहास के एक हिस्से में मिला दिया क्योंकि इज़राइल, जो एक नागरिक सेटिंग था, का पतन हो गया और वास्तव में गायब हो गया। चर्च वह पैकेज बन गया जिसका उपयोग ईश्वर दुनिया को अपना सत्य बताने के लिए करता है। अब्राहम के समय से लेकर 70 ई. तक , मूल रूप से, ईश्वर ने इज़राइल को एक पैकेज के रूप में इस्तेमाल किया था जिसके माध्यम से उसने दुनिया को अपना संदेश भेजने के लिए काम किया था, और चर्च उस संदेश के संबंध में उस चुनौती को उठाता है क्योंकि यह मसीह में पूरा होता है और चर्च के माध्यम से इसके ऐतिहासिक महत्व के संदर्भ में भरा जाता है।

और इसलिए, यह भेंट इस बात की स्वीकृति है कि चर्च यहूदियों और खास तौर पर पुराने नियम के प्रति कृतज्ञता का ऋणी है। पुराने नियम और नए नियम को कभी अलग न करें। दोनों के बीच दरार डालने की कोशिश न करें।

पुराने नियम में बहुत कुछ है, सिर्फ़ इस्राएल का इतिहास ही नहीं, सिर्फ़ परमेश्वर के छुटकारे के काम का इतिहास ही नहीं, बल्कि पुराने नियम में बहुत सी नैतिक शिक्षाएँ हैं जिनकी हमें अभी भी ज़रूरत है। ऐसे बहुत से मुद्दे हैं जो नए नियम में संबोधित नहीं किए गए हैं, जिन्हें पुराने नियम में संबोधित किया गया है - बहुत से नैतिक मुद्दे।

कई यौन मुद्दे हैं, और हमें उस जानकारी की आवश्यकता है ताकि हम इसे अपने नैतिक संदर्भ में ला सकें। इसलिए, डिस्पेंसेशनल परंपराओं, कम से कम शुरुआती लोगों में, नियमों को विभाजित करने का एक तरीका था। लेकिन रायरी स्टडी बाइबल, जो उस डिस्पेंसेशनल समूह की स्टडी बाइबलों में से आखिरी है, ने भी इसे बहुत हद तक सुधारा।

वास्तव में, शेफ़र और शॉफ़ील्ड के मूल लेखकों ने शायद रायरी को निकाल दिया होता अगर उन्होंने उसकी स्टडी बाइबल देखी होती, लेकिन जब तक उसने वह बाइबल बनाई, तब तक वे बहुत पहले ही जा चुके थे। उन्हें लगा कि माउंट पर उपदेश कानूनी सामग्री थी, लेकिन ऐसा नहीं था। यह अच्छी नैतिक सामग्री है।

इसलिए, हमें इस बात में बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम पुराने और नए के बीच की सीमा रेखाएँ कैसे खींचते हैं। इसमें निरंतरता की तुलना में निरंतरता अधिक है, और फिर भी इसमें वास्तविक रूप से निरंतरता की भावना है। कई चीजें जिनके बारे में हम बात नहीं करेंगे, जैसे कि इजरायल, एक नागरिक इकाई के रूप में।

यह एक राष्ट्र था। इसकी अपनी सरकार थी। मैं इसका ज़िक्र अंत में करूँगा जब हम अर्पण के सवाल पर आएँगे।

तो, यह भेंट यरूशलेम में संतों के लिए पौलुस के जुनून से संबंधित है। यह अन्यजातियों की कलीसिया के उनके प्रति ऋण की स्वीकृति है। दूसरे, यह अन्यजातियों की कलीसिया के सच्चे विश्वास का प्रतीक है।

उनमें आस्था है क्योंकि अब्राहम में आस्था थी, और यह विश्वास इज़राइल के माध्यम से प्रसारित हुआ और पॉल द्वारा नए नियम में उठाया गया, जो यहूदियों में से एक यहूदी था, और ईसाईकरण, क्राइस्टोलॉजीकरण , यदि आप चाहें, और फिर मुक्ति कार्यक्रम के संदर्भ में पारित किया गया। यीशु शास्त्रों के अनुसार मरे, विशेष रूप से पुराने नियम के अनुसार। तीसरा, यदि आप चाहें तो, यरूशलेम और ग्रीको-रोमन दुनिया के बड़े हिस्से के बीच कभी-कभी होने वाले तनावों के मद्देनजर एक प्रकार की ताड़ की शाखा है।

जैसे यहूदी विदेशों में बिखरे हुए थे, वैसे ही प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार ईसाई भी विदेशों में बिखरे हुए थे, और जब ऐसा हुआ, तो वे कहाँ गए? वे उस जगह चले गए जिसे डायस्पोरा के नाम से जाना जाता है। जेम्स की पुस्तक अपने शुरुआती छंदों में इसका इस्तेमाल

करती है। डायस्पोरा वे यहूदी हैं जो विदेशों में बिखरे हुए हैं, और जैसे वे प्राचीन दुनिया में अटलांटिक से लेकर पश्चिमी एशिया तक फैले हुए थे, वह सब यहूदी समुदायों के इलाकों में फैला हुआ था, और परंपरा के अनुसार, जब उनके पास 10 यहूदी परिवार होते थे, तो वे एक आराधनालय शुरू करते थे।

आराधनालय एक सामुदायिक केंद्र है। यह कोई मंदिर नहीं है। आराधनालय को कभी भी मंदिर न समझें।

यह कोई मंदिर नहीं है। आराधनालय एक सामुदायिक केंद्र था जहाँ यहूदी लोग शास्त्रों को सुनने और ईश्वर पर चर्चा करने तथा अपने समुदाय को नियमित रूप से एक साथ इकट्ठा करने के लिए एकत्रित होते थे, और इसलिए जब ईसाई उस बड़ी दुनिया में गए, और जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हैं, तो आप इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। वे सबसे पहले आराधनालय गए और यहूदियों को संदेश दिया।

फिर वे यूनानियों के पास गए, आमतौर पर अगोरा में, जो बाज़ार था, और इसलिए आपको उस पूरी आबादी वाली दुनिया में ये सारे अवसर मिले, जहाँ ईसाइयों की पहुँच आसान थी। ईसाई मिशन के संबंध में ईश्वर का समय श्रेष्ठ है। सिकंदर महान से विरासत को कौन चलाएगा, इसकी शक्ति के लिए लड़ाई का निपटारा हो चुका है।

रोम जीत गया है। उन्होंने ईसा के समय से लगभग सातवें दशक पहले ऐसा किया था। उन्होंने अपना शासन स्थापित कर लिया है।

यूनानी महान योद्धा थे। उन्होंने भूमि पर विजय प्राप्त की, लेकिन वे संगठन और उसे बनाए रखने में अच्छे नहीं थे। रोम एक संगठनात्मक मशीन था, रोमन कानून, रोमन प्रक्रियाएँ और प्रणालियाँ, और उन्होंने वह दुनिया ले ली जो सिकंदर ने उन्हें दी थी और बस अंदर चले गए और उस पर नियंत्रण कर लिया।

उनके पास खुद एक बड़ी सेना थी, बेशक, लेकिन साथ ही, उन्हें वह विरासत में मिला जो सिकंदर महान ने और उसके अपने उत्तराधिकारियों ने हासिल किया था। उस ज्ञात दुनिया भर में, यहूदी मौजूद थे, जिसने ईसाइयों को यहूदियों को यह बताने के मामले में उनके मिशनरी कार्य तक तत्काल पहुँच प्रदान की कि यीशु मसीहा थे। वह वही है जो पिता को राज्य सौंपने जा रहा है, और इसलिए, कृतज्ञता का एक बड़ा ऋण है, और एक महान एकीकरण है, न केवल एकीकरण, बहुत अधिक एकीकरण है, बल्कि यहूदियों और ईसाइयों के बीच एक महान संबंध है, और इसे कभी नहीं भूलना चाहिए।

आज भी, यहूदी विद्वानों द्वारा बाइबल का अध्ययन ईसाई विद्वानों के लिए बहुत लाभकारी है, और मैं ऐसे सेमिनारों में जाता हूँ जहाँ यहूदी और ईसाई धर्मग्रंथों के अध्ययन के मामले में आपस में बातचीत करते हैं। बेशक, पहली सदी, खास तौर पर सुसमाचार, अपनी साहित्यिक शैली के मामले में अभी भी पुराने नियम के थे। यही कारण है कि बहुत से लोगों को पॉल को पढ़ने के बाद सुसमाचार पढ़ने में परेशानी होती है, क्योंकि सुसमाचार अभी भी पुराने नियम के साहित्यिक हैं,

और परिणामस्वरूप, सुसमाचारों से निपटने के लिए आपको यहूदी व्याख्याशास्त्र की समझ होनी चाहिए।

ऐसा न करने के परिणामस्वरूप सुसमाचारों पर बहुत नुकसान और दुर्व्यवहार किया गया है। अब, 16:2-4। अब, 16:1 पर ध्यान दें, जो चर्चों के लिए किए जाने वाले संग्रह के बारे में है, और यहाँ पद दो से चार में पॉल के निर्देश आते हैं। प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन, हर सप्ताह, आप में से प्रत्येक को अपनी आय के अनुसार एक राशि अलग रखनी चाहिए।

यह NIV है, इसे सहेज कर रखें ताकि जब मैं आऊँ, तो कोई संग्रह न करना पड़े। यह एक दिलचस्प छोटी सी बात है, है न? इसे समय से पहले प्राप्त करें। फिर, जब मैं आऊँगा, तो मैं उन लोगों को परिचय पत्र दूँगा जिन्हें आप स्वीकार करते हैं और उन्हें आपके उपहार के साथ यरूशलेम भेज देंगे।

अगर मुझे भी जाना उचित लगता है, तो वे मेरे साथ चलेंगे। यह इस बारे में एक आकर्षक छोटी सी जानकारी है कि पौलुस ने पैसे को कैसे संभाला। यह एक महत्वपूर्ण राशि हो सकती थी, और उन दिनों में, यह एक भारी राशि रही होगी क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के सिक्कों और सोने, सोने और चांदी में रही होगी। यह आभूषण से लेकर कुछ भी हो सकता था, जिसे पैसे के बदले में बदला जा सकता था, या खुद पैसा, जिसे संभवतः एक बोझा ढोने वाले जानवर पर रखकर यरूशलेम वापस ले जाना पड़ता था।

यह कोई छोटा काम नहीं होगा, खास तौर पर उस दुनिया में जहाँ रोमन सड़कें बहुत बड़ी थीं, लेकिन उस प्राचीन दुनिया में बहुत सारी लूटपाट होती थी। इसलिए, यह किसी भी तरह से एक छोटा प्रोजेक्ट नहीं होगा। 16.2-4. सप्ताह का पहला दिन।

अब, वह रविवार है, और वह वह दिन था जब ईसाई मुख्य रूप से पूजा करते थे। अब, प्रेरितों के काम की पुस्तक के दौरान, वे अक्सर मिलते थे; कभी-कभी, वे हर दिन मिलते थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक के शुरुआती भाग में, सप्ताह के पहले दिन एक साथ कॉर्पोरेट समूह के रूप में मिलने का पैटर्न बन गया।

प्रेरितों के काम 20, आयत 7 में इस बात की ओर इशारा किया गया है। यह स्पष्ट रूप से उस समय के रूप में संकेतित है जब ईसाई औपचारिक रूप से एकत्रित हुए थे। यहाँ देने के बारे में उनका प्रोत्साहन केवल यरूशलेम परियोजना के बारे में नहीं है।

माफ़ करें, मैंने वहाँ 'नहीं' शब्द डाला है, और मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह केवल यरूशलेम परियोजना के बारे में है। यह इस बारे में कोई अनुच्छेद नहीं है कि चर्च को अपना समर्थन कैसे करना चाहिए।

यह यहूदी ईसाइयों के लिए, खास तौर पर यरूशलेम में, एक विशेष भेंट के बारे में एक अंश है। इस उद्देश्य के लिए बार-बार भेंट चढ़ाने से इसे बढ़ने में मदद मिलेगी। इसलिए, जब पॉल वहाँ पहुँचता है, तो उसे फिर से प्लेट पास करने की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि यह सब ध्यान रखा जाता है और जाने के लिए तैयार हो जाता है।

ध्यान दें कि पॉल दशमांश या किसी अन्य मानक जैसे किसी भी मानक की अपील नहीं करता है, सिवाय इसके कि जो भी व्यक्ति वहन कर सकता है। जैसा कि ज़ेरविक कहते हैं, RSV इसे इस तरह से कहता है, आप में से प्रत्येक को जो कुछ भी अतिरिक्त कमाता है उसे अलग रखना और बचाना है। NIV 2011 में, आपको अपनी आय के अनुसार एक राशि अलग रखनी चाहिए, उसे बचाना चाहिए।

यहाँ कोई मानक नहीं बताया गया है। यह एक तरह की पेशकश है जो आपके बिलों का भुगतान करने और अपने दायित्वों का ध्यान रखने के बाद संबंधित है, आपको एक लाभ होता है, और इसे वह दान माना जाता है जिससे आप अपने फंड निकालते हैं। यह एक तरह से दिलचस्प है।

हमारे समय में, दशमांश देने की स्थिति का विचार चर्चों में बहुत ज़्यादा प्रचलित है, अक्सर संग्रह को उस जगह पर रखने के लिए एक चालाकीपूर्ण तरीका के रूप में जहाँ उन्हें होना चाहिए। तो, कृपया इस पर ध्यान दें। मैं वापस आकर एक और टिप्पणी करूँगा।

पॉल के निर्देश इस बारे में हैं कि कैसे सभी को एक समान स्तर दिया जाए ताकि अमीर और गरीब सभी भाग ले सकें। अपनी जीवन परिस्थितियों के अनुसार जितना हो सके उतना दें। यह थोड़ा हो सकता है, यह बहुत हो सकता है, लेकिन कोई मानक नहीं है।

10% अमीरों के लिए कुछ भी नहीं हो सकता है, लेकिन यह गरीबों के लिए सब कुछ हो सकता है। और इसलिए, हर किसी को भगवान के सामने वह देना चाहिए जो उन्हें उनकी ज़रूरतों से ज़्यादा मिला है, और यही यहाँ मानक बन जाता है। निहितार्थ उचित है कि देने का संबंध ज़रूरतों की पूर्ति के बाद है।

इसमें कोई हेराफेरी नहीं है । इस भेंट के संबंध में कोई अपराधबोध नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपना दान परमेश्वर के समक्ष करता है।

पॉल इस बात का प्रबंधन नहीं करता कि आप कैसे देते हैं। इसके अलावा, वह केवल इसलिए दान चाहता है ताकि वह इसे यरूशलेम ले जा सके। पॉल ने उनसे कहा कि वे अपनी बहुतायत में से दें।

वह उनसे बलिदान देने के लिए नहीं कहता। मैंने जितने भी उपदेश सुने हैं, उनमें हमेशा बलिदान देने की अवधारणा होती है। वे अक्सर सुसमाचारों में विधवा की शक्ति का उपयोग करते हैं, जो कि वह आखिरी दिन है जब यीशु मंदिर में था, उस दिन की आखिरी घटना जब यीशु ने जुनून सप्ताह के दौरान मंदिर में उपदेश दिया था।

जब वे जा रहे थे, तो उन्होंने विधवा और उसके विधवा होने की शक्ति देने की कहानी सुनाई। वह कहानी देने के बारे में नहीं थी। इसे देने के मानक के बारे में बात करने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

इसका इस्तेमाल प्रतिबद्धता और वफ़ादारी के बारे में बात करने के लिए किया जाना चाहिए। विधवा की शक्ति एक उदाहरण है कि उस पूरे दिन मंदिर में यीशु ने जितने भी लोगों का सामना किया, उनमें से चाहे वे धार्मिक नेता हों या कोई और, केवल वही एक ऐसी महिला है जिसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। वह एकमात्र ऐसी महिला है जो परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को उच्चतम स्तर पर दिखा रही है।

तो, इसमें थोड़ा त्याग है क्योंकि वह निश्चित रूप से उस पैसे का उपयोग कर सकती थी, लेकिन उस यहूदी व्यवस्था के तहत, वह परमेश्वर के प्रति वफ़ादार थी। और यीशु ने इसकी सराहना की, वह एकमात्र चीज़ जिसकी वह पूरे दिन सराहना करता है। लेकिन यह एक अलग संदर्भ है।

यह वही संदर्भ नहीं है। पॉल इस भेंट के नियंत्रण से और उपहार के संदर्भ में देखभाल से खुद को दूर रखता है जबकि अभी भी जुड़ा हुआ है। यहां तक कि अंतिम वाक्यांश, अगर वह जुड़ा रहता है, तो वह यात्रा का प्रभारी होगा।

यह दिलचस्प है कि यह 16 में कहा गया है। अगर मुझे जाना उचित लगता है, तो वे भी मेरे साथ जाएंगे, लेकिन मैं उनके साथ जाऊंगा। पॉल एक प्रेरित था, और इसलिए, वह परियोजना की देखरेख करने के लिए वहां होगा।

हालाँकि, यह पूर्ण नहीं है। यह पूर्ण नहीं है। हम नहीं जानते कि इस संबंध में वास्तव में क्या हुआ।

अब, यह ध्यान देने के लिए एक उपयुक्त स्थान है, जैसा कि मैंने पहले ही संकेत दिया है, कि बाइबल में दशमांश की अवधारणा इज़राइल से संबंधित है। यह सृष्टि का इज़राइल है। इज़राइल एक धार्मिक और नागरिक इकाई दोनों था।

इस्राएल को मंदिर के लिए धन की आवश्यकता थी, लेकिन इस्राएल को इस्राएल राष्ट्र के बुनियादी ढांचे के लिए धन की आवश्यकता थी। वास्तव में, जब कोई पुराने नियम में देने की अवधारणा का अध्ययन करता है, तो वह पाता है कि आप दशमांश को 30 प्रतिशत कह सकते हैं, न कि 10 प्रतिशत क्योंकि अलग-अलग बिंदु थे जिन पर दान किया गया था। वे यरूशलेम में त्योहारों पर जाते थे, न कि केवल परमेश्वर की आराधना करने के लिए।

हाँ, यही कारण था कि वे वहाँ थे, लेकिन इससे शहर की आर्थिक स्थिरता भी बनी रही। वे पूरे एक सप्ताह के लिए आए और डेरा डाला और पैसे खर्च किए। वास्तव में, पुराने नियम में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है: खरीदो, खाना खरीदो, पियो और भगवान की पूजा करते हुए पार्टी करो।

यह सब यरूशलेम शहर, इस्राएल राष्ट्र और पुजारियों के बुनियादी ढांचे का समर्थन करता था जो मंदिर की संभावनाओं और प्रक्रिया को विनियमित करते थे। और इसलिए, परिणामस्वरूप, वह दशमांश वास्तव में उनका कर था। जिसे दशमांश के रूप में जाना जाता है वह वास्तव में एक कर है, और वह कर न केवल धार्मिक उद्देश्य से बल्कि नागरिक उद्देश्य से प्रेरित है, और यह इज़राइल के लिए अद्वितीय है।

यह चर्च नहीं है। दशमांश धार्मिक और नागरिक जीवन के कई क्षेत्रों को कवर करने के लिए एक कर था। नया नियम कभी भी दान के मानक के रूप में दशमांश के मुद्दे को नहीं उठाता है।

यह नए नियम में कहीं भी नहीं है। कोई व्यक्ति पुराने नियम के पैटर्न के साथ एक उपयोगी सादृश्य संबंध देख सकता है, लेकिन यह बाइबल के साथ छेड़छाड़ और दुर्व्यवहार का जोखिम है, इसलिए यदि आप इसे सादृश्य रूप में भी उपयोग करते हैं तो बहुत सावधान रहें। मुझे यह काफी दिलचस्प लगता है कि मेरे द्वारा जाने गए कई ईसाई खुद को पुराने नियम से दूर रखना चाहते हैं, लेकिन वे खुद को दशमांश की अवधारणा से दूर नहीं रखना चाहते क्योंकि यह उपयोगी है।

खैर, आइए हम बाइबल का इस्तेमाल करते समय सावधान रहें। आइए हम इसका इस्तेमाल उसी तरह करें जिस तरह इसका इस्तेमाल करने का इरादा था। नए नियम में इस बारे में बहुत सारी बातें हैं कि कैसे देना है और क्या देना है।

समस्या यह है कि हमने अपनी दुनिया में चर्च के बारे में ऐसी संरचनाएँ बनाई हैं जो वास्तव में नए नियम की अवधि का हिस्सा नहीं थीं, और परिणामस्वरूप, हमने कुछ बहुत बड़े बजट की आवश्यकता भी पैदा कर दी है। चर्च सप्ताह में छह दिन खाली रहते हैं, उनमें से कई एक सेवा के लिए होते हैं। शुक्र है, उनमें से कई में डेकेयर की सुविधा भी है।

उनमें से कई परामर्श सप्ताह के दौरान अन्य धार्मिक पहलुओं को शामिल करते हैं और शायद बाइबल अध्ययन और इस तरह की अन्य चीजें भी करते हैं, लेकिन मुख्य बात यह है कि हमारी वर्तमान संस्कृति में सप्ताह में एक बार ऐसा होता है क्योंकि बहुत सी सेवाएं अब नहीं होती हैं जो पहले हुआ करती थीं। कुछ चर्च कई, कई, कई, कई मिलियन डॉलर के प्लांट बनाते हैं। वे उन्हें कैंपस कहते हैं।

वे उस शब्द का उपयोग क्यों करते हैं, मुझे नहीं पता क्योंकि वहाँ इतनी शिक्षा नहीं होती, मुझे डर है। यदि यह एक परिसर है, तो इसे एक स्कूल होना चाहिए, और इसलिए, परिणामस्वरूप, चर्च में बजट जुटाने के मामले में हमारे सामने एक चुनौती है, और यह वास्तव में कठिन होता जा रहा है। चर्च कई स्तरों पर संघर्ष कर रहा है, लेकिन दिन के अंत में, देने और समर्थन करने की अवधारणा एक उत्पाद है।

यह कोई लक्ष्य नहीं है। यह एक उत्पाद है। अगर आप चाहें तो इसे आध्यात्मिकता का उत्पाद कह सकते हैं।

यह प्रतिबद्धता का परिणाम है। यह दुनिया में ईश्वर के वचन के प्रसार के लिए निर्धारित पहलुओं पर धन खर्च करने की आवश्यकता को स्वीकार करने का परिणाम है। यदि आप उन अन्य चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और लोगों का बोझ बढ़ने पर धन आने देते हैं, तो आपको अधिक धन मिलेगा।

अगर आप पैसे के लिए पैसे पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप समस्याओं और प्रतिरोध के लिए अभिशप्त हैं। इसलिए, इस भेंट के संबंध में पॉल का एक दिलचस्प कथन यहाँ दिया गया है। हम इससे कई बातें सीख सकते हैं।

यह संक्षिप्त है, लेकिन इसमें ऐसी जानकारी भरी हुई है जो सादृश्य द्वारा हमारे लिए अभी भी उपयोगी है। आगे बढ़ते हुए, पृष्ठ 242 के मध्य में, पॉल के दल की यात्रा योजनाएँ। न केवल आयत 1 से 11 में हमारे पास संग्रह, 1a है, बल्कि अब 2a में, हमारे पास पॉल के लिए यात्रा योजनाएँ हैं।

यह किसी पत्र के अंत में असामान्य नहीं है। कुछ पत्र दूसरों की तुलना में लंबे होते हैं। रोमियों और 1 कुरिन्थियों के पत्रों के अंत काफी लंबे हैं, और हम उन अंतों से यात्रा और उसके ऐतिहासिक स्वरूप के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं।

एक प्रवृत्ति होती है, खास तौर पर एक लंबी किताब और एक चुनौतीपूर्ण किताब के अध्ययन के बाद, बस अंतिम शब्दों को खारिज कर दिया जाता है या जल्दी से आगे बढ़ जाता है। और हम इससे बचने की कोशिश करना चाहते हैं, भले ही हम इसे जितना संभव हो उतना पूरा न करें, लेकिन उम्मीद है कि हम इसे पर्याप्त रूप से पूरा करेंगे। पॉल की अपनी यात्रा योजनाओं का पूर्वाभ्यास हमें इस बारे में कई अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि शुरुआती मिशनरी मंत्रालय कैसे संचालित होते थे।

मुझे मिशनरी शब्द का इस्तेमाल करना होगा। मैं और कौन सा शब्द इस्तेमाल कर सकता हूँ? पॉल एक प्रेरित था। उसने हर जगह यात्रा की।

उनके साथ काम करने वाले अन्य लोग भी थे जो संभवतः बुज़ुर्ग थे। उनमें से प्रत्येक अलग-अलग तरीकों से प्रतिभाशाली थे । वे पादरी हो सकते थे, लेकिन वे सभी घुमक्कड़ थे।

और पौलुस की गतिविधियों के साथ जो हम इन पत्रों के अंत में सीखते हैं, हम कुछ पहलुओं को देख सकते हैं कि पहली सदी में एक मिशनरी होने का हमारे संदर्भ में क्या मतलब था। आज, हम मिशनरी शब्द का उपयोग उन लोगों के लिए करते हैं जो आमतौर पर मातृभूमि छोड़कर विदेशी भूमि पर जाते हैं और सुसमाचार का प्रचार करते हैं। हम इसे यहाँ अमेरिका में इस्तेमाल कर सकते हैं मैंने अमेरिका में सैनिकों और सेना के साथ, नॉरफ़ॉक, वर्जीनिया और की वेस्ट, फ्लोरिडा में और अपनी कुछ स्कूली शिक्षा के बीच कुछ मिशनरी कार्य किए।

मिशनरी शब्द वह है जिसका उपयोग हमें विचार संप्रेषित करने के लिए करना चाहिए। इफिसियों 4 में पादरी और शिक्षकों के साथ-साथ इंजीलवादी शब्द का उपयोग किया गया है, लेकिन तथ्य यह है कि एक इंजीलवादी काफी हद तक मिशनरी जैसा होगा। मुझे लगता है कि मिशनरी शब्द वह सब कुछ दर्शाता है जिसका हमें उपयोग करने की आवश्यकता है। सबसे पहले, बुलेट पॉइंट 242 के मध्य में हैं।

आरंभिक मिशनरी परियोजनाएँ हमेशा घुमंतू होती थीं। स्थानीय नेतृत्व संस्थापक मण्डलियों से ही उभरता था। उस स्थानीय परिस्थिति के लिए नेतृत्व और मंत्री उसी समूह से उभरे।

अब, इस बारे में सोचना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उनमें से कई लोग पहली बार धर्मांतरित हुए थे, खासकर यहूदी, माफ़ कीजिए, गैर-यहूदी मिशन में। वे पहली बार धर्मांतरित हुए थे। उन्हें सिखाया जाना ज़रूरी था।

शायद यही कारण है कि पॉल, जॉन और अन्य लोगों ने इन चर्चों का इतनी बारीकी से मार्गदर्शन किया। यही कारण है कि उनके पास एक दल था। वे लगातार शिक्षा देते थे, और वे उन लोगों को एक या दो साल के लिए वहीं छोड़ देते थे।

पॉल कुछ सालों तक इफिसुस में रहा। उसने कुरिन्थ और अन्य स्थानों पर दूसरों को पढ़ाने में लंबा समय बिताया ताकि वे बाहर जाकर इन मण्डलियों में पढ़ाने की ज़रूरतों को पूरा कर सकें। इसलिए, यह एक चुनौती थी, और हमें इसके बारे में पता होना चाहिए और यह समझना चाहिए कि उसके पास हमेशा सेमिनरी स्नातकों का एक समूह नहीं था जिसमें से चयन किया जा सके।

उन्हें यह अच्छा लगता, लेकिन उन्होंने तुरंत ही सेमिनरी कर ली, जो उनके लिए उपलब्ध एकमात्र काम था। इसलिए, ये संस्थापक मण्डलियाँ, इतनी घुमक्कड़, यही मुख्य शब्द है। मिशनरियों को किसी दूसरे चर्च द्वारा किसी दूसरे स्थान पर रहने और अपना काम करने के लिए नहीं भेजा जाता था।

अब, इसमें कुछ भी गलत नहीं है, जो कि कुल मिलाकर आधुनिक तरीका है, क्योंकि हम यहाँ इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि आप मिशन कैसे करते हैं। हम विवरण के बारे में बात कर रहे हैं, जिस तरह से उन्होंने इसे किया। इसलिए, हम आज इसे कई अलग-अलग तरीकों से कर सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इसकी यात्राशील प्रकृति में एक सिद्धांत शामिल है जो हमें प्रभावित करना चाहिए।

हमारा उद्देश्य एक ही स्थान पर 30 साल बिताना, वहाँ जीवन व्यतीत करना, चर्च का पादरी बनना और उसे कभी न छोड़ना नहीं है। अधिकांश अच्छे मिशनरी, यह एक तरह का, क्षमा करें, यह थोड़ा चालाकी भरा वाक्यांश है, है न? लेकिन अधिकांश मिशनरियों का लक्ष्य एक चर्च ढूँढना, उसे स्थापित करना और फिर कहीं और जाकर दूसरा चर्च ढूँढना होता है। अगर ऐसा नहीं हो रहा है, तो मुझे मिशनरी मंत्रालय के उनके दर्शन पर सवाल उठाना होगा।

मिशनरी मुख्य रूप से उन स्थानों पर निर्भर थे जहाँ वे सेवा करते थे। जैसा कि आप देख सकते हैं, प्रेरित और उनके साथी शारीरिक और वित्तीय ज़रूरतों के लिए उन स्थानों पर निर्भर थे जहाँ वे थे। उन्होंने उन्हें ठहराया, उनके लिए प्रावधान किया, और फिर, जैसा कि पाठ में कहा गया है, कई स्थानों पर उन्हें उनके योग्य तरीके से भेजा गया।

इसका संबंध उन्हें अगले स्थान पर जाने, स्थापित होने और वहां अपना मंत्रालय शुरू करने के लिए पर्याप्त धन देने से है, जहां लोगों का वह समूह उन्हें उठाएगा और उनका समर्थन करेगा। तो, यह पहली सदी में, आरंभ में, नौकरी पर समर्थन की स्थिति थी। फिलिप्पी जैसे कुछ चर्चों ने देखा कि यह कितना गंभीर था और उन्होंने पॉल को पैसे भेजने की कोशिश की।

लेकिन कुल मिलाकर, यह ऑन-साइट था। उनका समर्थन उनके मंत्रालय के बीच में ही जुटाया गया था, और खर्चों से ऊपर कोई वेतन नहीं था। उनके पास मूल रूप से वह पैसा था जो उन्हें उस समय की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए चाहिए था।

एक बार फिर, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आधुनिक मिशनों में खर्चों से ज़्यादा वेतन नहीं होना चाहिए। हमारी अपनी संस्कृति में कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें मिशन की अवधारणा के बारे में गंभीरता से सोचने की ज़रूरत है, यह किस लिए है, इसमें शामिल लोगों के लिए इसका क्या मतलब है, और वे इसे कैसे करते हैं।

यह धन संचय करने की जगह नहीं है। यह निश्चित रूप से हमारी संस्कृति में आपकी सेवानिवृत्ति की योजना बनाने की जगह है क्योंकि संभवतः आप खुद की देखभाल करने का मौका मिलने से पहले मरने वाले नहीं हैं। हमारे पास स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी और भी कई चुनौतियाँ हैं।

इस सामान का ध्यान रखा जाना चाहिए, लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए कि हम ऐसी स्थिति न पैदा करें जहां मिशन कॉल और कार्य की तुलना में समर्थन स्तर में अधिक रुचि रखते हैं। और मैं मानूंगा कि, मोटे तौर पर, यही मामला है, लेकिन इसे केस-दर-केस आधार पर देखना होगा। इसलिए हम यहां वर्णनात्मक सामग्री से निपट रहे हैं, जो निर्देशात्मक नहीं है, लेकिन विचार करने के लिए अच्छे सुराग हैं।

इसमें भी भिन्नताएं थीं। ऐसा लगता है कि पॉल अविवाहित था। हम पॉल के बारे में ज़्यादा नहीं जानते।

हो सकता है कि वह शादीशुदा रहा हो, और उसकी पत्नी ने उसे छोड़ दिया हो, या उसकी मृत्यु हो गई हो। यहूदी नेताओं के लिए, यह नियम था कि वे विवाहित हों, और इसलिए हमारे पास पॉल के बारे में वह सारी जानकारी नहीं है जो हम चाहते हैं। हम जानते हैं कि पीटर शादीशुदा था।

वह अपनी पत्नी को अपने साथ लेकर घूमता था क्योंकि लोग इसके बारे में शिकायत करते थे, और मैंने यहाँ इसका उल्लेख किया है। पतरस अपनी पत्नी को भी साथ लेकर घूमता था। आम तौर पर पॉल के साथ यात्रा करने वाले लोगों का एक दल होता था, इसलिए हर उस जगह पर सहायता जाल की ज़रूरत होती थी जहाँ वे सेवा करते थे।

इसका मतलब था आवास और भोजन, और फिर, जब वे चले गए, तो उन्हें अगले स्थान पर जाने के लिए पर्याप्त धन- तीसरा बुलेट पॉइंट। ऐसे कई अंश हैं जो हमें इन श्रमिकों की यात्राओं के बारे में जानकारी देते हैं।

प्रेरितों के काम, रोमियों, टाइटस, जॉन का सुसमाचार, दूसरा कुरिन्थियों, यहाँ तक कि पहला मैकाबीज़, जिसमें कहा गया है कि रोमियों ने हर जगह लोगों को पत्र भेजे थे, जिसमें उनसे यहूदा की भूमि पर दूतों के सुरक्षित मार्ग के लिए प्रावधान करने के लिए कहा गया था, यही वह है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। तो प्राचीन दुनिया में यात्रा की प्रकृति ऐसी ही थी। प्राचीन दुनिया इसी तरह संचालित होती थी।

सेमिटिक परिवेश में आतिथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि यह उनके दायित्व का हिस्सा था। वास्तव में, यदि आपने फिल्म देखी है, तो मुझे इसका नाम भी याद नहीं है, लेकिन यह अफगानिस्तान में मारे गए सील और नेवी सील के बारे में एक सच्ची कहानी थी। उनमें से एक व्यक्ति अरबों के आतिथ्य के नियमों के कारण बच गया, जहाँ यह व्यक्ति समाप्त हो गया।

गाँव के लोगों ने उसकी रक्षा की, यहाँ तक कि अपने कुछ लोगों की जान भी गँवाई और अपने अरब दुश्मनों से भी लड़ाई की, ताकि वे इस व्यक्ति के आतिथ्य का वचन निभा सकें। इसलिए, प्राचीन प्रथाएँ समय-समय पर हमारी दुनिया के एशियाई भागों में भी उभर कर आई हैं। पहला कुरिन्थियों 16.6, ताकि आप मुझे मेरे रास्ते पर भेज सकें।

यह एक तकनीकी वाक्यांश है जो कई जगहों पर आता है। यह तीसरे यूहन्ना में भी आता है, जो मेरे पसंदीदा छोटे पत्रों में से एक है, जहाँ गयुस यूहन्ना, प्रेरितों, दल को उनके योग्य तरीके से आगे और पीछे भेजता है। उन्हें उस सहायता की आवश्यकता थी, और आपको उस पत्र को बार-बार पढ़ने की आवश्यकता है, साथ ही दूसरे यूहन्ना को भी।

तीसरा , जॉन मेरे लिए भ्रमणशील मिशनों के आरंभिक कार्य की सबसे पसंदीदा झलक है। पॉल की मृत्यु के बाद, प्रेरित जॉन ने एशिया माइनर की कलीसियाओं का प्रबंधन किया। आरंभ में, वह इफिसुस में रहता था, और संभवतः उसे इफिसुस से तीमुथियुस की सहायता मिली होगी।

तीसरा, जॉन ने बताया कि उस दिन किस तरह से घुमंतू काम हुआ। बहुत रोचक है। डिडेचे में भी यही है।

डिडेचे दूसरी सदी का सिद्धांत है। यह 12वीं सदी के बारे में है, और यह बताता है कि आरंभिक चर्च कैसे किया जाता था। डिडेचे में एक खंड है जो भ्रमणशील मंत्रालय के बारे में बात करता है, और यह कि वे केवल थोड़े समय के लिए आते हैं, और फिर उन्हें आगे बढ़ना होता है।

वे बसते नहीं हैं। यदि वे बहुत लंबे समय तक रहते हैं, वास्तव में, उस समय, मुझे लगता है कि यह दो या तीन दिनों से शुरू होता है; वे वैध नहीं थे। वे झूठे शिक्षक थे क्योंकि वे समुदाय पर निर्भर थे।

इसलिए, यह देखना बहुत दिलचस्प पहलू है कि यह दुनिया घुमंतू शिक्षकों के मामले में कैसे काम करती है। अपनी यात्रा संबंधी जानकारी के संबंध में, पॉल पद 9 में संरक्षण प्रणाली के बारे में भी बात करता है। यह उन क्षेत्रों में से एक है, जैसा कि आपको याद होगा, कि... मैंने पद 9 कहा, लेकिन मैं... हाँ, पद 8। लेकिन मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में ही रहूँगा क्योंकि मेरे लिए प्रभावी कार्य के लिए एक बड़ा द्वार खुल गया है, और ऐसे बहुत से लोग हैं जो मेरा विरोध करते हैं।

और यह यहाँ श्लोक 15 में थोड़ा आगे आता है। मैंने इसे अपने नोट्स में पहले ही पा लिया है। रोमन संरक्षण प्रणाली ने ईसाई मिशन की भी सेवा की, और हम इसे 16:15 में देखेंगे।

मुझे यकीन नहीं है कि मैंने इसे यहाँ क्यों रखा है, लेकिन हम इसे वहाँ देखेंगे। अगली बात टिमोथी की स्थिति है। टिमोथी पॉल के साथ प्रमुख, शायद सबसे प्रमुख व्यक्ति था।

इपफ्रास, इपफ्रदीतुस, तीतुस और मरकुस जैसे कई अन्य लोग भी थे। ऐसे कई लोग थे जो पौलुस के दल का हिस्सा थे, और उनका उल्लेख कई पत्रों के अंत में किया गया है - आयत 10 और 11 में तीमुथियुस का उल्लेख है।

जब तीमुथियुस आए, तो ध्यान रखें... अब, यहाँ कुछ अन्य व्यक्तिगत जानकारी दी गई है। बहुत पहले हमारे पहले व्याख्यानों में से एक में, जब हमने उस प्राचीन पत्र को देखा, तो हमने उस बहुत ही संक्षिप्त पत्र के अंत में कुछ ऐसा देखा, लेकिन यहाँ इस पर ध्यान दें। तीमुथियुस आए, ध्यान रखें कि उसे किसी बात का डर न हो।

आखिर पौलुस ने ऐसा क्यों कहा? इसके दो कारण हैं। एक तो रोमी कुरिन्थ का मजबूत व्यक्तित्व और शायद तीमुथियुस का कमजोर व्यक्तित्व, जिसके बारे में पौलुस ने पादरी पत्रों में बात की है। तीमुथियुस वफादार था।

तीमुथियुस ने कड़ी मेहनत की, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि तीमुथियुस वह व्यक्ति है जिसे आप मजबूत व्यक्तित्व कह सकते हैं, और पॉल, स्पष्ट रूप से, उसकी रक्षा कर रहा है। वह कहता है, देखो उसे डरने की कोई बात नहीं है। यह इस बात से संबंधित हो सकता है कि कुरिंथ कितना डराने वाला हो सकता है, जैसा कि 1 कुरिंथियों 4 में बताया गया है, और 2 कुरिंथियों में, या यह तीमुथियुस का अपना व्यक्तित्व हो सकता है।

दूसरा भाग, कोई उसे तुच्छ न जाने। ऐसा प्रतीत होता है कि तीमुथियुस में वह सामर्थ्यपूर्ण व्यक्तित्व नहीं है। 1 तीमुथियुस 4, 2 तीमुथियुस 1 और 2। इसके बारे में बात करें।

तो, पॉल उसे बचा रहा है। सच कहूँ तो, तीमुथियुस के लिए यह सब सार्वजनिक रूप से पढ़ना थोड़ा शर्मनाक रहा होगा, लेकिन फिर भी, यही मामला है। तो, किसी को भी उसके साथ अवमाननापूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए।

कुछ लोगों ने बताया कि उसकी युवावस्था ऐसी थी जिसकी प्रशंसा पादरी वर्ग में नहीं की गई। इसलिए किसी को भी उसके साथ घृणा नहीं करनी चाहिए। उसे उसके रास्ते पर भेज दो।

शांति में फिर से वही मुहावरा है। शालोम, एक तरह से, हर अच्छे तरीके से मतलब रखता है।

यह सिर्फ़ इतना नहीं है कि उसे दरवाज़े पर मत मारो, दरवाज़े से बाहर निकालो। ताकि वह मेरे पास लौट आए। मैं भाइयों के साथ उसका भी इंतज़ार कर रहा हूँ।

यह वह दल होगा जिसका हम उल्लेख करते हैं। उसे उसके रास्ते पर भेजो। तो, इस भाषा में बहुत सारी बारीकियाँ हैं जो भ्रमणशील मंत्रालय की प्रकृति और उन व्यक्तियों का समर्थन करने के लिए चर्चों की ज़िम्मेदारी से संबंधित हैं।

यह उनका मिशनरी प्रोजेक्ट था, अगर आप चाहें तो, साथ ही उन्हें अपने लोगों, विधवाओं, गरीबों और विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहे लोगों की देखभाल और देखभाल करने के लिए जो भी

अतिरिक्त खर्च करना पड़ता था। वह समुदाय अपनी देखभाल के मामले में पूरी तरह से आंतरिक था। प्राचीन दुनिया में कोई सामाजिक सुरक्षा प्रणाली नहीं थी।

सामाजिक सुरक्षा प्रणाली परिवार थी। अब्राहम से लेकर अब तक, हम देखते हैं कि किस तरह से यह कथाओं में काम करती थी। और यही बात पहली सदी में भी सच है।

आपका परिवार आपका सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क है। इसने इसे बहुत महत्वपूर्ण बना दिया। इसने ज्येष्ठ पुत्र के मुद्दों को भी महत्वपूर्ण बना दिया, यहाँ तक कि नए नियम में भी, खास तौर पर पुराने नियम जैसी सेमिटिक संस्कृति में।

और इसलिए, इसकी देखभाल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। 16:12 में अपुल्लोस। अब हमारे भाई अपुल्लोस के बारे में।

अब यह सुनो और सोचो। सोचो। मैंने उससे बहुत आग्रह किया था कि वह भाइयों के साथ तुम्हारे पास जाए।

अब, दृढ़ता से आग्रह किया गया। यह कोई कमज़ोर कथन नहीं है। अगर पॉल ने आपको कुछ करने के लिए दृढ़ता से आग्रह किया है, तो आपको इसे प्रस्तुत करना चाहिए।

खैर, अपोलोस ने ऐसा नहीं किया। वह अभी जाने के लिए बिलकुल भी इच्छुक नहीं था, लेकिन जब उसे मौका मिलेगा तो वह जाएगा। मैं खुद को प्रेरित पौलुस से यह कहते हुए नहीं सोच सकता कि देखो, पॉल, मैं अभी इनमें से कुछ अन्य कामों में बहुत व्यस्त हूँ।

जब मुझे मौका मिलेगा, मैं जाऊंगा। बस धैर्य रखें। सच कहूं तो, मुझे नहीं लगता कि यह उस पाठ के निहितार्थों का कोई अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

पॉल बहुत ही ईमानदार है। और शायद वे कुरिन्थ में अपोलो को पसंद करते थे क्योंकि अपोलो के बारे में हम जो थोड़ा बहुत जानते हैं, वह यह है कि वह एक वक्ता था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो भाषण दे सकता था, और आप वहाँ अपना मुँह खुला रखकर बैठ जाते।

और इसलिए, उन्होंने कई कारणों से उनकी उपस्थिति का अनुरोध किया होगा। हो सकता है कि यही कुछ कारण हों कि वह जाना नहीं चाहते थे। हमें नहीं पता।

पॉल चाहता था कि वह चला जाए। उसने स्पष्ट रूप से उससे जाने के लिए विनती की, और अपोलोस ने कहा, नहीं, मैं अभी नहीं जा रहा हूँ। वह स्पष्ट रूप से पॉल के प्रबंधित दल का हिस्सा नहीं था, लेकिन वह एक स्वतंत्र व्यक्ति था, लेकिन संगति में, और मुझे पॉल के संबंध में यकीन है।

हम उसके बारे में ज़्यादा नहीं जानते, लेकिन वह अपना खुद का आदमी था और पॉल ने उसे एक योग्य मंत्री के रूप में स्वीकार किया था। मुझे यह पसंद है। पॉल किसी को पीछे धकेल सकता था, और पॉल ने फिर भी उनकी सराहना की और उनका सम्मान किया, हालाँकि वह अपनी बात नहीं मनवा पाया।

बहुत से नेता इसे संभाल नहीं पाते। यह जानना अच्छा है कि पॉल को हमेशा अपनी मर्जी से काम नहीं मिलता था और वह अपनी मर्जी से काम न मिलने की समस्या को संभाल सकता था। और इसलिए यहाँ हमारे पास यात्रा की योजनाएँ हैं।

हमारे पास प्रस्ताव है, और यात्रा की योजनाएँ आगे बढ़ रही हैं। भौगोलिक रूप से कुछ अन्य विवरण हैं जिनके बारे में हमने अभी बात नहीं की है, जिन पर कोई भी आगे की जानकारी ले सकता है। आपको अपने लिए एक अच्छा नक्शा चाहिए।

आप कभी-कभी इंटरनेट से या किसी अच्छी सर्वेक्षण पुस्तक से इन्हें प्राप्त कर सकते हैं। ठीक है, तो चलिए अब पत्र-पत्रिका के समापन की ओर बढ़ते हैं। याद रखें, हर पत्र-पत्रिका की एक औपचारिक शुरुआत होती है।

हर पत्र का एक औपचारिक समापन होता है, और यहीं पर हम अब पद 13 में आ रहे हैं। जबकि ऐसा लगता है कि यह पहले शुरू हो सकता था, यह वास्तव में पद 13 में शुरू होता है क्योंकि पॉल ने अपोलोस के साथ अब भी चिंता का उपयोग किया है, जो 7.1 से जुड़ता है। तो शायद कुरिन्थियों ने अपोलोस की उपस्थिति के लिए दबाव डाला था, और शायद पॉल उन्हें सिर्फ यह बता रहा है, अरे, मैंने कोशिश की, लेकिन वह इसके साथ नहीं रहेगा। पद 13: सावधान रहें।

विश्वास में दृढ़ रहो। साहसी बनो। मजबूत बनो।

यह एक पत्र के अंतिम कथन में एक बहुत ही विशिष्ट परिवर्तन है। प्रोत्साहन और आह्वान, सतर्क रहने के लिए एक सामान्य उपदेश। सावधान रहें।

यह एक क्रिया है जिसका प्रयोग भविष्य के परिप्रेक्ष्य और परलोक संबंधी सतर्कता के लिए 21 बार किया गया है, खासकर सुसमाचारों में, उदाहरण के लिए, जागते रहना और प्रार्थना करना। और इसलिए, यह ऐसा शब्द नहीं है जिसका सार उन्होंने कम से कम कुछ हद तक नहीं समझा होगा। जागते रहना का मतलब है सतर्क रहना।

सावधान रहो। तैयार रहो। तुम विश्वास में दृढ़ खड़े हो।

विश्वास में दृढ़ रहो। मैं साहसी और मजबूत था। सांसारिक अभ्यास के लिए सीमाएँ प्रदान करें।

पॉल इस उपदेश के साथ समाप्त होता है। विश्वास में दृढ़ रहें, सिर्फ़ दृढ़ ही न रहें। पॉल को उन्हें विश्वास के बारे में बताना था कि उचित प्रक्रियाएँ क्या हैं, और इसका क्या मतलब है कि सांसारिक न बनें, अभिजात्यवाद और स्थिति आदि की तलाश न करें, बल्कि एक बाइबिल व्यक्ति बनें।

और वह विश्वास में यह भी जोड़ता है कि, मुझे लगता है, उन सभी बातों को वापस लाना चाहिए जिन पर चर्चा की जा रही है, जो कि दृढ़ रहने का अर्थ है। शास्त्रों को मत छोड़ो। पाठ को पाठ ही रहने दो।

ठीक है। सब कुछ करो। साहसी और मजबूत बनो।

सब कुछ प्रेम से करो। आयत 15 और उसके बाद की आयतों में प्रशंसा। हमारे पास कुरिन्थ के मसीही कार्यकर्ताओं का सम्मान करने के लिए प्रशंसा है।

वैसे, श्लोक 14 कुछ हद तक अध्याय 13 की याद दिलाता है, है न? तथाकथित प्रेम अध्याय। और प्रेम एक गतिविधि है। याद रखें, प्रेम सिर्फ़ एक भावना नहीं है।

प्रेम एक क्रिया है। हर काम प्रेम से करो। समुदाय प्रेम की अवधारणा में काम करता है।

प्रेम समुदाय का संरक्षक है। यह समुदाय का प्रबंधक है और यह कैसे काम करता है - श्लोक 15।

आप जानते हैं कि स्तिफनास का परिवार अखाया में सबसे पहले धर्मांतरित हुआ था, और उन्होंने खुद को प्रभु के लोगों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। मैं आपसे आग्रह करता हूँ, भाइयों और बहनों, ऐसे लोगों और हर उस व्यक्ति के अधीन रहो जो इस काम में शामिल होता है और मेहनत करता है। जब स्तिफनास फ़ोर्टुनैटस और अखायास आए तो मुझे खुशी हुई क्योंकि उन्होंने वह सब कुछ पूरा कर दिया था जिसकी तुम्हें कमी थी।

यह भी असामान्य नहीं है। बहुत से समापनों में, जैसे कि इपफ्रदीतुस, उदाहरण के लिए, कुलुस्सियों में, पॉल कभी कुलुस्से में नहीं गया था, लेकिन इपफ्रदीतुस वही है , जिसने चर्च की स्थापना की थी, वह पॉल के दल में से एक था , जिसने चर्च की स्थापना की थी, और फिर वह पॉल के पास आया और उससे मुलाकात की। और पॉल ने उसके बारे में लिखा और उसे उस मण्डली में बढ़ावा दिया।

इसलिए, मण्डली ने लोगों को भेजा। जब पॉल जेल में था, तो उस जेल में, यह एक तरह से घर में नज़रबंदी जैसा था, लेकिन यह एक सुविधा थी। लेकिन आपको अपनी देखभाल खुद ही करनी थी।

आपको अपना भोजन वगैरह खुद ही जुटाना पड़ता था। रोम में आपकी कोई देखभाल नहीं होती थी। आपको यह विशेषाधिकार प्राप्त था कि कोई आकर आपके लिए कुछ ला सकता था।

और कलीसियाओं ने कई अवसरों पर पौलुस का ख्याल रखा। और हमारे पास, खास तौर पर रोम के संबंध में, इसके कुछ संदर्भ हैं। क्योंकि उन्होंने मेरी और आपकी आत्मा को भी तरोताजा कर दिया।

ऐसे लोग सम्मान के हकदार हैं। उन्होंने जो मेरे लिए किया, वही आपके लिए भी किया। ठीक है।

यह दिलचस्प है, है न? अब, हमें जागते रहने, डटे रहने का सामान्य उपदेश मिला है - कोरिंथियन मसीही कार्यकर्ताओं का सम्मान करने के लिए एक प्रशंसा। पौलुस ने इनमें से कई कार्यकर्ताओं को शुरू किया जो सेवकाई में मूल्यवान थे।

स्टेफ़नस का घराना संभवतः चर्च के संरक्षण का घराना था। उसका उल्लेख पत्र की शुरुआत में और यहाँ भी किया गया है। और विंटर ने नोट किया कि संरक्षक आमतौर पर अच्छे काम करके अपने लिए सम्मान बढ़ाने के लिए प्रेरित होते हैं।

वे बदले में कुछ पाने के लिए अच्छा करते हैं। पॉल के कथन में, स्टेफनस ने इसके विपरीत किया। उसने समुदाय को सम्मान दिया और सिर्फ़ अपने ही नहीं, बल्कि उनकी स्थिति में भी सुधार किया।

और यही वह परिवर्तन था जिसकी पौलुस तलाश कर रहा था। और इस व्यक्ति के पास वह था। पौलुस का पत्र 19 से 24 आयतों में उसके अंतिम अभिवादन में समाप्त होता है।

चर्चों का मौजूदा नेटवर्क यहाँ सबसे पहले आता है। एशिया प्रांत के चर्च। और अगर आप यहाँ भूमध्य सागर, ग्रीस का पेलोपोनेसस, और फिर पानी देख सकते हैं, और फिर मुख्य भूमि इफिसस समुद्र तट तक आती है, जैसा कि यह था।

वहाँ एक नदी थी जो गाद से भर गई थी, और इसने नदी को भर दिया और इफिसस को थोड़ा पीछे धकेल दिया। लेकिन शुरुआती दिनों में, यह एक व्यापारिक बंदरगाह के रूप में पानी के करीब था। और फिर दाईं ओर, अगर आप इसे देख रहे थे, तो आपको सात चर्चों का घेरा मिला है जो आपको पॉल में मिलता है, लेकिन यह जॉन है जो पहली सदी के अंत में पॉल की मृत्यु के बाद उन चर्चों का प्रबंधन करता है।

आपको याद होगा कि पॉल ने 1 कुरिन्थियों को इफिसुस से लिखा था। इफिसुस ही वह जगह थी जहाँ से जॉन ने काम किया था। और हमारे पास इस बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है कि क्या जॉन उस समय वहाँ था जब पॉल वहाँ था या जॉन बाद में आया था।

क्या यूहन्ना यरूशलेम में अधिक समय तक रहा और फिर इफिसुस आया? यह संभवतः बहुत संभव है। तीमुथियुस ने भी इफिसुस से काम किया। और यह कल्पना करना बहुत अधिक कल्पनाशील नहीं है कि पौलुस की मृत्यु के बाद, तीमुथियुस इफिसुस में था, और जब यूहन्ना आया, तो हमारे पास फिर से वही टीम है, प्रेरित और तीमुथियुस।

उस समय, इफिसुस एशिया के रोमन प्रांत की राजधानी थी। 16:19 में एशिया के चर्चों में बहुत बड़ा स्पेक्ट्रम शामिल है। इफिसुस, कुलुस्से, हीरोपोलिस , वहाँ एक टाइपो है, कि क्यू को ओ होना चाहिए। हीरोपोलिस , लाओडिसिया, और शायद प्रकाशितवाक्य 1:11 में वर्णित अन्य चर्च। लाओडिसिया उस समूह का हिस्सा था, लेकिन ये सात चर्च हैं जिनका प्रबंधन जॉन करता था।

और यह मेरे लिए दिलचस्प है, बस इसके बारे में सोचो, जॉन ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्याय 1 से 3 के चर्चों का प्रबंधन किया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, यीशु इनमें से कुछ शुरुआती कथनों में बोलते हैं। जॉन को यह तब मिलता है जब वह पतमोस द्वीप पर होता है।

और जॉन उन चर्चों को जानता था। वे उसके लिए अनजान नहीं थे। फिर, उसे हर चर्च के बारे में ये संदेश मिलते हैं।

यह एक आकर्षक स्थिति रही होगी जब आप परमेश्वर के विश्लेषण को सुन रहे होंगे कि आप क्या प्रबंधित कर रहे हैं। शायद उन्हें सही दिशा में लाने की कोशिश कर रहे होंगे लेकिन यह मुश्किल हो रहा होगा। इफिसुस, जो इतना महान चर्च था, ने अपना पहला प्यार खो दिया था।

और यह स्पष्ट रूप से अपने पूर्व स्वरूप और अपनी प्रतिबद्धता की छाया मात्र था। इसलिए, इन भौगोलिक संदर्भों के संदर्भ में सोचने के लिए बहुत सी रोचक बातें हैं। यह भी दिलचस्प है कि पहली सदी के अंतिम दशकों में, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, प्रेरित यूहन्ना एशिया की कलीसियाओं का पर्यवेक्षक था।

यह जानने के लिए कि उनके साथियों के साथ ऐसा कैसे हुआ, विशेष रूप से 3 यूहन्ना को पढ़ें। लेकिन 2 यूहन्ना को पढ़ें जहाँ चर्च के संरक्षक को संबोधित किया गया है, और वास्तव में एक महिला को। और देखें कि यह कैसे होता है।

शब्द सुनने के आदी हैं । लेकिन प्रिस्का, वे रोमन चर्च के लिए जानी जाती थीं क्योंकि वे कुरिन्थ में रहने के दौरान पॉल के प्रमुख धर्मान्तरित थे।

और रोमी कुरिन्थ उन्हें जानते होंगे। प्रेरितों के काम 18. वे एक समय में कुरिन्थियन चर्च के संरक्षक रहे होंगे।

रोमियों 16. रोमियों 16 आयत 3 और 4 के अनुसार वे पौलुस की सेवकाई के दल का हिस्सा बन गए। तो, ये दो प्रमुख लोग थे। इस बार सबसे पहले अक्विला का ज़िक्र किया गया है।

वे ईसाई चर्च के विकास के शिक्षक और प्रवर्तक थे। वे रोम में व्यापारी रहे होंगे। वे काफी यात्रा करते थे।

हम उन्हें यहाँ-वहाँ उभरते हुए देखते हैं। और यह एक बहुत ही परिवर्तनशील दुनिया थी। और जो लोग उद्यमी और व्यापारी थे, वे यात्रा करते थे।

एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से बधाई देना। वैसे, उनकी संस्कृति में, वे एक दूसरे को चुम्बन से बधाई देते थे। यूरोप की तरह, जैसा कि आपने कई बार देखा होगा या अभ्यास किया होगा।

यह अभिवादन का एक आम रिवाज़ था। जैसे कुछ संस्कृतियों में हाथ मिलाना एक आम रिवाज़ है। हाथ मिलाना विनम्र या गर्मजोशी भरा हो सकता है।

और ये दो लोग ही हैं जो अंतर पैदा करते हैं। यहाँ तक कि हाथ मिलाने के साथ गले लगना भी। अमेरिकी संस्कृति में, चुंबन को कभी भी बहुत ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाता।

फिर भी, हम एक दूसरे को पवित्र चुंबन के साथ बधाई देते हैं। एक अच्छा हाथ मिलाना इसके बराबर है। आप देख सकते हैं कि यह कितना वर्णनात्मक है और निर्देशात्मक नहीं है।

पौलुस के प्रमाणिक हस्ताक्षर। यह अध्याय 16 और पद 21 में पत्रों का एक दिलचस्प अंश है।

मैं, पॉल, यह अभिवादन अपने हाथ से लिख रहा हूँ। समापन, या क्षमा करें, यह समापन, एक अमानुएन्सिस के उपयोग को दर्शाता है। एक अमानुएन्सिस एक पेशेवर लेखक होता था।

और पहली सदी में दस्तावेज़ बनाने के लिए उनका काफ़ी इस्तेमाल किया गया था। और कई जगहों पर यह बिल्कुल स्पष्ट लगता है कि पॉल ने लिपिकों का इस्तेमाल किया था। वे उसके दल का हिस्सा हो सकते हैं या वे स्थानीय पेशेवर हो सकते हैं।

हम नहीं जानते। उस आम प्रथा के परिणामस्वरूप, पॉल ने अंत में कुछ लिखकर या कम से कम अपने हस्ताक्षर देकर पत्र को प्रमाणित किया। इस बारे में बहुत सारे प्रस्ताव हैं कि पॉल ने पूरी बात खुद क्यों नहीं लिखी।

वह निश्चित रूप से ऐसा करने में सक्षम था। इसका एक उत्तर यह है कि जब लुस्त्रा के रास्ते पर पौलुस पर पत्थर फेंके गए, तो उसकी आँखें क्षतिग्रस्त हो गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे देखने में परेशानी हो रही थी, और कुछ समस्याएँ थीं और इससे उसकी लेखन क्षमता प्रभावित हुई होगी।

पौलुस के शरीर में काँटे का कथन है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह उसके साथ जो कुछ हुआ, उससे संबंधित है। जब लोग आपको पत्थर मारते हैं, तो वे आपके पैरों पर पत्थर नहीं फेंकते।

वे उन्हें आपके सिर पर फेंक देते हैं। और सबसे अधिक संभावना यह है कि लुस्त्रा के रास्ते पर पत्थरबाजी के परिणामस्वरूप पॉल को बहुत बुरी तरह से जख्मी कर दिया गया था और शायद उसकी दृष्टि भी खराब हो गई थी। हमें नहीं पता।

यह शायद उसी का पुनर्निर्माण है। लेकिन हम देखते हैं कि पॉल ने लिपिकार का उपयोग किया और फिर अपने हस्ताक्षर या किसी अंतिम कथन के साथ पत्र को प्रमाणित किया। गलातियों में , वह इस बारे में बात करता है कि मैं कितने बड़े अक्षरों में लिखता हूँ।

और यह उसकी दृष्टि को भी संदर्भित कर सकता है। तीसरी बात पॉल की गंभीर अभिशाप है, और 1622 में मारानाथा। यदि कोई प्रभु से प्रेम नहीं करता, तो वह व्यक्ति शापित हो।

वाह, यह तो ऐसा है जैसे आपके चेहरे पर ठंडा पानी फेंका गया हो। यह बहुत कठोर लगता है, है न? यह वास्तव में एक शाप है। पुराने नियम में हमारे पास शापात्मक भजन हैं जहाँ लेखक किसी अन्य राष्ट्र, व्यक्ति या परिस्थिति के विरुद्ध तर्क देते हुए उस परिस्थिति पर परमेश्वर के न्याय की मांग करता है।

खैर, यह उस आधार से बहुत दूर नहीं है। यह मौखिक रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह पर्याप्त रूप से स्पष्ट है कि यह एक शापात्मक प्रकार का कथन है। यदि आप प्रभु से प्रेम नहीं करते हैं, तो आप शापित हैं।

आप अभिशाप हैं। यह अध्याय 12 की शुरुआत में वापस जाता है जहाँ अभिशाप को लाया गया है। हम इस संबंध को पूरी तरह से स्पष्ट नहीं कर सकते हैं, लेकिन फिर भी यह शब्द है।

प्रभु आओ, और यह शब्द है मरनाथा। यह एक अरामी शब्द है जिसका अर्थ है प्रभु के पास आओ, और इसे यहाँ मरनाथा शब्द के साथ लिप्यंतरित करने के बजाय अनुवादित किया गया है। अंतिम अभिशाप, मरनाथा, 1 कुरिन्थियों के लिए अद्वितीय है।

आपको यह बात नए नियम के संदर्भ में कहीं और नहीं मिलेगी, हालाँकि आप इसकी शुरुआत गलातियों 1:8 और 9 से कर सकते हैं जहाँ एक शाप का उल्लेख किया गया है। हे मूर्ख गलातियों, किसने तुम्हें मोहित कर लिया है? उस पत्र की शुरुआत में कोई बात नहीं है। प्रोटोकॉल टूट गया है, जो गलातियों की पुस्तक की शुरुआत के संदर्भ में एक बहुत बड़ा कथन है।

एक अभिशाप एक नए नियम का शाप है। मारानाथा एक अरामी शब्द है जो पहली सदी के फिलिस्तीन में एक आम भाषा थी। फिट्ज़मेयर का दावा है कि पॉल ने अरामी भाषा में प्रार्थना की, संभवतः यीशु द्वारा अपने सांसारिक जीवन में अरामी भाषा के उपयोग के साथ सहसंबंध में।

खैर, मुझे नहीं पता कि यह सब क्या है। यह एक बहुत ही पतला लेख है, जिसमें सिर्फ़ एक शब्द है जो कोड वर्ड बन सकता था। लेकिन फिर भी, यीशु और प्रेरित अरामी, यूनानी और संभवतः हिब्रू भाषा में पारंगत थे।

और शायद पॉल लैटिन भी जानता था, जो रोम की भाषा थी। ऐतिहासिक दस्तावेजों में रोमन फिलिस्तीन में इन भाषाओं के साथ-साथ आधिकारिक रोमन व्यवसाय के लिए लैटिन के उपयोग के प्रमाण हैं। हमारे पास पहली सदी के फिलिस्तीन में सैन्य पत्राचार है जहाँ आदेश अरामी, ग्रीक और लैटिन में भेजे जाते थे ताकि कोई भ्रम न हो।

प्राप्तकर्ता के घर पर कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो उन भाषाओं में से एक को पढ़ सकता है। तो, पॉल बहुत गंभीर है। आप जानते हैं, यह नहीं है, वह यहाँ खेल नहीं खेल रहा है।

यदि आप प्रभु से प्रेम नहीं करते, तो आप शापित हैं। आओ प्रभु। प्रभु यीशु की कृपा आप पर बनी रहे।

मसीह यीशु में आप सभी को मेरा प्यार। आमीन। पॉल समुदाय के लिए अपना प्यार बताता है।

बाइबल में प्रेम समुदाय में प्रमुख है - वाचा निष्ठा की अवधारणा। शास्त्रों में प्रेम एक भावनात्मक शब्द नहीं है जैसा कि यह हमारी कई संस्कृतियों में है।

प्यार एक प्रतिबद्धता है। अगर आप अपने पति या पत्नी से प्यार करते हैं, तो आप उनके प्रति प्रतिबद्ध हैं। हमेशा की तरह, जब लोग पादरी के दफ़्तर में आते हैं और तलाक चाहते हैं, तो वे कहते हैं, हम नहीं चाहते क्या? हम अब एक दूसरे से प्यार नहीं करते।

और फिर मैं उन्हें उस समय प्यार का पाठ पढ़ाता हूँ। प्यार का संबंध इस बात से नहीं है कि आप कैसा महसूस करते हैं। प्यार का संबंध उस प्रतिबद्धता से है जो किसी रिश्ते को बनाए रखने के लिए की गई है।

अब, चर्चा करने के लिए बहुत सी बातें हैं। मैं इस चर्चा को संक्षिप्त करके महत्वहीन नहीं कर रहा हूँ। लेकिन सच्चाई यह है कि प्यार एक भावनात्मक बयान से कहीं ज़्यादा है।

मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मेरे दिल में तुम्हारा सबसे अच्छा होना है। प्यार अच्छा करने का निर्णय है, प्यार की वस्तु के प्रति सबसे बड़ा संभव अच्छाई।

हमने अध्याय 13 में इस बारे में बात की थी। और यही बात पौलुस कह रहा था। और यही नकारात्मक बात श्लोक 22 में भी सच है।

अगर आप भगवान से प्यार नहीं करते, यानी अगर आप भगवान को नहीं पहचानते कि वह कौन है और खुद को उनके प्रति समर्पित नहीं करते, और इसलिए आप उससे अलग रहते हैं, तो आप शापित हैं। आप भगवान की कृपा को नहीं जानते। आपके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है।

ठीक है, तो हम कुछ विषयों पर वापस आ गए हैं जिन्हें हमने पहले देखा था। यह दिलचस्प है कि 1 कुरिन्थियों एकमात्र ऐसा पत्र है जहाँ पौलुस ने अपने प्राप्तकर्ताओं के लिए अपने प्रेम के बारे में बात की है। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि वह दूसरों से बिल्कुल भी प्यार नहीं करता था।

लेकिन यह दिलचस्प है कि उन्होंने इसे यहाँ अंत में इस्तेमाल किया है। शायद, इस पत्र की प्रकृति को देखते हुए, यह शुरुआती श्रोताओं और उनके रिश्ते दोनों के लिए विशेष रूप से उत्साहजनक है। अब, यह तथ्य कि उन्होंने प्रेम का उपयोग नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह से किया है, यह भी दिलचस्प है।

यदि कुरिन्थ में अभी भी ऐसे लोग हैं जो अपनी कुलीनता और स्थिति के कारण, प्रभु के प्रति वाचा की वफ़ादारी नहीं दिखाते हैं, तो वे शापित हैं। इसलिए, पौलुस सीमांकन की एक रेखा खींच रहा था । वह शब्दों को कम नहीं कर रहा है, और वह प्रभु यीशु मसीह के प्रति गंभीर, गंभीर स्तर की प्रतिक्रिया का आह्वान कर रहा है।

और अपने चर्च को। खैर, यह 1 कुरिन्थियों है। यह 1 कुरिन्थियों का संश्लेषण है।

क्या किताब है। आप और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। और अपने मंत्रालय के लिए 1 कुरिन्थियों के भीतर गंभीर विचारों को समझने के लिए दृढ़ विश्वास और नियंत्रण प्राप्त करने के लिए, आपको अपने आप ही शोध करना होगा।

भले ही आपने मेरी बात सुनने और नोट्स का सही तरीके से इस्तेमाल करने में दृढ़ता दिखाई हो, फिर भी आपको खुद ही पढ़ना और शोध करना होगा क्योंकि यह वह प्रक्रिया है जो आपके पूरे अस्तित्व में समाहित होने के लिए आवश्यक है। और आपको आत्मविश्वास प्राप्त करने और दूसरों की मदद करने में सक्षम होने के लिए। यह आसान नहीं है, लेकिन यह आवश्यक है।

और मुझे विश्वास है कि आप अपने मंत्रालयों में इस तरह आगे बढ़ने का साहस रखेंगे। मैं कहना चाहूँगा कि, समापन करते समय, यदि आप इन 31 व्याख्यानों के दौरान हमारे साथ रहे हैं, तो आपको बधाई। मुझे यकीन है कि कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठकर मेरी बातें सुनना आसान नहीं है।

मुझे उम्मीद है कि मेरे नोट्स ने आपको इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भ्रमित या ऊब नहीं होने में मदद की है। मुझे उम्मीद है कि मैंने आपको आगे शोध करने के लिए प्रेरित किया है। मुझसे सहमत होना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नहीं है, बल्कि शास्त्रों की खोज करना है।

तो, ऐसा करने के लिए बधाई। हालाँकि घंटे और नोट्स बहुत ज़्यादा लग सकते हैं, लेकिन मुझे इस बात का दुख है कि हमने अपने बहुत से दावों को साबित करने में सिर्फ़ सतही तौर पर ही काम किया है। मैंने बहुत कुछ कहा है, लेकिन मैंने कभी-कभी बहुत कुछ बिना किसी सबूत के भी कह दिया है क्योंकि आप इस तरह के संदर्भ में ऐसा नहीं कर सकते।

लेकिन मैंने आपको संसाधन इसलिए दिए हैं क्योंकि ये मेरे शानदार विचार नहीं हैं। ये सिर्फ़ मेरी सोच नहीं है, बल्कि ये 1 कुरिन्थियों के साहित्य में अच्छी तरह से स्थापित हैं। अगर आप वीडियो की इस श्रृंखला की समीक्षा करेंगे तो मैं आभारी रहूँगा।

मैं इसकी सराहना करूंगा। व्याख्यानों की शुरुआत में नोट्स में मेरा ईमेल है। और यदि आप मुझे इन व्याख्यानों के दौरान अपने अनुभवों की ताकत और कमजोरियों की समीक्षा के बारे में ईमेल भेजेंगे।

इस मौजूदा सीरीज में मैं ज़्यादा कुछ ठीक नहीं कर सकता, लेकिन मुझे उम्मीद है कि मैं कुछ और कर पाऊंगा। मैं ईश्वर की इच्छा जानने पर एक सीरीज बनाना चाहता हूँ। मैंने इस पर एक किताब लिखी है, और मैं इसे इस तरह के प्रारूप में रखना चाहता हूँ।

मेरे पास आत्मा के फल पर एक गंभीर श्रृंखला भी है, जिसमें संभवतः 10 से 15 घंटे लगेंगे। इस प्रारूप में इसे प्रस्तुत करना एक छोटी सी श्रृंखला होगी। और भी बहुत सी चीजें हैं।

लेकिन मैं आपकी प्रतिक्रिया की सराहना करूंगा, क्योंकि इस वीडियो के कैमरे से संवाद करना आसान काम नहीं है। मैं ऐसा करने की कोशिश करता हूं, और कल्पना करता हूं कि आप वहां बैठे हैं, भले ही मुझे आपकी तत्काल प्रतिक्रिया न मिले। लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम आपका ध्यान आकर्षित करने में कम से कम कुछ हद तक सफल रहे हैं।

तो, भगवान आपको आशीर्वाद दें। और मैं इसे प्रार्थना के साथ समाप्त करने जा रहा हूँ, जैसा कि मैंने हमारी श्रृंखला में पहले उल्लेख किया था, कि मैं प्रत्येक की शुरुआत में औपचारिक प्रार्थना

नहीं करूँगा। मैं अपने लिए प्रार्थना करता हूँ, आप अपने लिए प्रार्थना करें, और हम काम पर लग जाएँ।

लेकिन मैं इसे सिर्फ़ एक प्रार्थना के साथ समाप्त करना चाहूँगा। हमारे पवित्र पिता, हम आपके हमारे प्रति प्रेम के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें इस दुनिया में अकेला नहीं छोड़ा, बल्कि आपने हमें अपना वचन दिया है, जो हमारे मार्ग के लिए एक प्रकाश और दीपक है।

आपने हमें अपनी शिक्षाओं के माध्यम से ज्ञान दिया है। आप हमें वे संरचनाएँ देते हैं जिनकी हमें अपनी दुनिया से निपटने के लिए ज़रूरत है। आप हमसे ऐसा करने की उम्मीद करते हैं क्योंकि हम आपकी छवि में बनाए गए हैं।

जब हम आपके शब्दों पर विचार करते हैं और उन्हें संसाधित करते हैं, तो हम उस प्रयास के परिणामस्वरूप आपको गौरवान्वित करते हैं। और आप उससे प्रसन्न होते हैं। और हम आपको धन्यवाद देते हैं कि हमें इस संबंध में आपको प्रसन्न करने का अवसर मिला है।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमारी वृद्धि और समझ ही एकमात्र ऐसी चीज़ न हो जिसे हम हासिल करें, बल्कि हमारा विश्वास और गहरा हो और हमारी प्रतिबद्धता और भी दृढ़ हो। ताकि हम दृढ़ रहें, जैसा कि कुरिन्थियों की पुस्तक रोमन कुरिन्थियों को करने के लिए प्रोत्साहित करती है। ताकि हम अपने विश्वासों में दृढ़ और दृढ़ रहें ताकि हम आपके लिए अच्छे दूत बन सकें।

हम प्रार्थना करते हैं कि आपका वचन पूरी दुनिया में फैल जाए। हम इन दिनों बहुत ही परेशान दुनिया में रह रहे हैं, और हमें अपनी दुनिया की बुराइयों को दूर करने के लिए चर्च ऑफ गॉड के माध्यम से ईश्वर की शक्ति की आवश्यकता है। हमें व्यक्तिगत रूप से इसकी आवश्यकता है।

हमें सामूहिक रूप से इसकी आवश्यकता है। और हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं कि आप यीशु के आने तक इसे प्राप्त करने में प्रसन्न होंगे, जिसके नाम पर हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

आप पर आशीर्वाद।

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह व्याख्यान 33, 1 कुरिन्थियों 16, यरूशलेम के संतों के लिए संग्रह के प्रश्न पर पॉल का उत्तर और समापन टिप्पणियाँ हैं।